Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 15, Issue No. 12, December-2018, ISSN 2230-7540

वैचारिक तौर पर स्वस्थ्य शिक्षा पद्धति ही स्वस्थ्य समाज, देश और विश्व का निर्माण कर सकती है

Dr. Kamla*

Education

सार - ***मौजूदा समय की शिक्षा व्यवस्था केवल बेरोजगारों की भीड़ तैयार कर रही है, इसमें बेशक शाब्दिक ज्ञान बहुत है लेकिन ये भी सच है कि ज्ञान अल्पकालिक होकर रह गया है, एक दौड़ हो रही है आगे निकलने की, शिक्षा कागजी न होकर व्यवहारिक होनी चाहिए साथ ही उसमें संस्कृति के गहरे उददेश्य भी नजर आने चाहिए। जब तक देश में अपनी शिक्षा प्रणाली नहीं होगी, जब तक मैकाले का मौन अनुसरण बंद नहीं होगा तब तक शिक्षा केवल कागजी होकर रह जाएगी वो गहरे ज्ञान में परिवर्तित नहीं हो सकती। ज्ञान यदि है तो अल्पकालिक नहीं हो सकता, वो दीर्घकालिक होता है, लेकिन कागजी ज्ञान दीर्घकालिक नहीं हो सकता। बेहतर है कि देश की शिक्षा में संस्कृति, गुरुकुल शिक्षा के साथ व्यवहारिक ज्ञान भी प्रमुखता से समाहित हो। देश की शिक्षा व्यवस्था यदि गहरी नहीं होगी, वो ज्ञान का पर्याय नहीं होगी तो देश में सांस्कृतिक और मौलिक ह्रास नहीं रोका जा सकता। हम दुनिया समझने निकले हैं, लेकिन देश की संस्कृति, देश का अतीत, देश का साहित्य हम नहीं समझ पाए हैं, उससे दूर रहे हो रहे हैं क्योंकि मैकाले की शिक्षा व्यवस्था की मंशा ही ये थी कि हम अपने आप अपनी संस्कृति और अपने देश के अतीत से दूर होते जाएं। शिक्षा व्यवस्था में सुधार आवश्यक है और ये जितनी जल्द होगा सुधार का शंखनाद भी उतनी ही शीघ्र होगा। वैचारिक तौर पर स्वस्थ्य शिक्षा पद्धति ही स्वस्थ्य समाज, देश और विश्व का निर्माण कर सकती है।***

----------X----------

संस्कृत से दूर और अंग्रेजी के करीब

एक वैचारिक तौर पर स्वस्थ्य शिक्षा पद्धति ही स्वस्थ्य समाज, देश और विश्व का निर्माण कर सकती है। मौजूदा दौर में सभी इस बात को बहुत गंभीरता से समझने लगे हैं कि जिस शिक्षा प्रणाली का वर्तमान समय में अध्ययन किया जा रहा है उस व्यवस्था में परिवर्तन समय की पहली मांग है। हम यदि वैश्विक स्तर पर बात करें तो ये बात बहुत साफ हो चुकी है कि भारतीय भाषा और उसका इतिहास बहुत गहरा है, हमें ये चिंतन करना होगा कि हमारे देश की भावी पीढ़ी आखिर संस्कृत से दूर और अंग्रेजी के करीब क्यों जा रही है। हमारी पुरातन शिक्षा संवाद पर जोर देती थी, मौखिक और उच्चारण प्रमुख होते थे। शिक्षण के दौरान छात्र-छात्राओं एवं शिक्षक के मध्य संवाद होना एक बेहतर विकल्प है। किसी भी विषय के बारे में सकारात्मक एवं नकारात्मक तत्वों के बारे में समझने के लिए ये आवश्यक है जिससे दोनों एक-दूसरे के विचारों से परिचित हो सकते हैं। हमें समझना होगा कि पंचतत्व की शिक्षा अध्ययन और जीवन के मूल तक ले जाती है।

ये गहरे चिंतन का विषय है कि अब तक हमारी शिक्षा नीति में मैकाले क्यों मौजूद है

वर्तमान में हम हर क्षेत्र में स्वतंत्र हैं। हम सभी आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक क्षेत्र के साथ ही विचारों की अभिव्यक्ति में भी पूरी तरह से स्वतंत्र हैं लेकिन एक अहम जगह पर हम अब भी मानसिक गुलामी भोग रहे हैं। देश की मौजूदा शिक्षा नीति पर चिंतन करें तो हमें सब कुछ बहुत साफ नजर आने लगेगा। इस क्षेत्र में आज भी हम टी.बी. मैकाले की शिक्षा प्रणाली का ही अनुसरण कर रहे हैं जिसे भारतीयों को गुलामी की जंजीरों में जकड़ने के लिए बनाया गया था। मानसिक गुलामी से मेरा अभिप्राय यह है कि आज भी हम उस शिक्षा प्रणाली का अध्ययन अपने पाठयक्रम में कर रहे हैं जो हमारी भारतीय संस्कृति, राष्ट्र भाषा एवं साहित्य के प्रति हीन भावना एवं उदासीनता को जन्म देती है। मेरे नजरिये से ये हमारे लिए गौरव की बात कतई नहीं हो सकती है कि हम अब तक इस देश में अपनी शिक्षा नीति तक नहीं बना पाए हैं, ये गहरे चिंतन का विषय है कि अब तक हमारी शिक्षा नीति में मैकाले क्यों मौजूद है ? मैकाले द्वारा

www.ignited.in

1835 में जो शिक्षा प्रणाली भारत के लिए तैयार की गई उस विवरण पत्र को तैयार करने से पूर्व मैकाले ने सन **1813** में इस शिक्षा नीति में अंग्रेजी भाषा को शामिल करने को लेकर जो तर्क दिया उस तर्क से मन बेहद दुखी हो उठता है जिसका उल्लेख आज भी हमारे पाठयक्रमों में शामिल है।

मैकाले का विवरण पत्र जिसमें उसने अंग्रेजी के पक्ष में तर्क इस तरह प्रस्तुत किया जिससे वो श्रेष्ठ नजर आए। मैकाले ने भारतीय भाषाओं को अध्ययन के लिए निरर्थक बताते हुए लिखा कि भारत के निवासियों में प्रचलित देशी भाषाओं में साहित्यिक तथा वैज्ञानिक ज्ञान कोष का अभाव है और वे इतनी अविकसित तथा गवारू हैं कि जब तक उनको बाह्य भण्डार से संपन्न नहीं किया जाएगा तब तक उनसे किसी भी महत्वपूर्ण पुस्तक का सरलता से अनुवाद न हो सकेगा। भारतीय भाषाओं की निरर्थकता सिद्ध करने के पश्चात मैकाले ने अरबी, फारसी और संस्कृत की अपेक्षा अंग्रेजी को कहीं अधिक उच्च स्थान देते हुए लिखा कि एक अच्छे यूरोपीय पुस्तकालय की एक आलमारी का भारत और अरब के सम्पूर्ण साहित्य से कम महत्व नहीं है। इस प्रकार अरबी, फारसी और संस्कृत को अध्ययन क्षेत्र से बाहर निकाल कर मैकाले ने अंग्रेजी को हमारी भाषाओं की अपेक्षा अधिक समृद्ध और श्रेष्ठ बताया। मैकाले का ये भी कहना था कि अंग्रेजी इस देश के शासकों की भाषा है, भारत के उच्च वर्ग द्वारा बोली जाती है। अंग्रेजी की शिक्षा द्वारा इस देश में ऐसे वर्ग का निर्माण किया जा सकता है जो रक्त और रंग में भले ही भारतीय होंगे लेकिन रूचियों एवं नैतिकता में अंग्रेज होंगे।

उपर्युक्त तर्को के आधार पर मैकाले ने अंग्रेजी शिक्षा का यशगान और समर्थन किया। क्या उपर्युक्त पाठयक्रम के माध्यम से छात्र छात्राओं में अपने देश की संस्कृति एवं भाषा के प्रति अप्रत्यक्ष रूप से हीन भावना का जन्म नहीं हो रहा ? वर्तमान उच्च शिक्षा प्रणाली में इस तरह के पाठयक्रम विद्यार्थियों में पाश्चात्य संस्कृति एवं अंग्रेजी भाषा के प्रति विशेष सम्मान एवं आकर्षण का कारण बनती जा रही है। इतना ही नहीं वो युवा और भावी पीढ़ी को देश की साहित्यिक और सांस्कृतिक विरासत से दूर कर रही है, साथ ही देश के विकास में भी वैचारिक बाधाएं उत्पन्न कर रही है। पाश्चात्य सभ्यता से हमारी उच्च शिक्षित युवा पीढ़ी इतनी अधिक प्रभावित हो रही है कि वो रोजगार के लिए अपने देश से पलायन करने में भी संकोच नहीं कर रही है। इतना ही नहीं युवा पीढ़ी विदेशों में अपने भविष्य को अधिक सुरक्षित महसूस कर रही है। सीधे अर्थो में समझा जाए तो मैकाले ने जिस उद्देश्य से शिक्षा नीति में अंग्रेजी को श्रेष्ठ बताकर आगे किया था वो अपने उस उद्देश्य पथ पर सरपट भाग रही है। मौजूदा दौर में सभी इस बात को बहुत गंभीरता से समझने लगे हैं कि जिस शिक्षा प्रणाली का वर्तमान समय में अध्ययन किया जा रहा है उस व्यवस्था में परिवर्तन समय की पहली मांग है। हम ये बात भी भलीभांति समझने लगे हैं कि भाषा ज्ञान प्राप्त करने या विचारों को व्यक्त करने का एक माध्यम है, हम किसी भी विषय को अपनी मातृ भाषा के माध्यम से अधिक बेहतर तरीके से सीख सकते हैं। मैकाले ने भी इसी उद्देश्य से या यूं कहें कि भारत के साथ अपने विचारों के आदान-प्रदान या संपर्क भाषा के रूप में अंग्रेजी को शिक्षा प्रणाली में शामिल किया जिसका गहरा असर वर्तमान में स्पष्ट परिलक्षित हो रहा है।

विश्व हमारी संस्कृत भाषा को लेकर गंभीर

हमारे देश की प्राचीन भाषा संस्कृत है जिसे देव भाषा भी कहा जाता है। संस्कृत भाषा से ही कई अन्य भाषाओं का जन्म हुआ ऐसा माना जाता है कि हिंदी भी इसी का परिष्कृत रूप है। संस्कृत के माध्यम से पुरातन शिक्षा पद्धति के संचालन का उददेश्य मात्र शिक्षित करना नहीं था अपितु संस्कृत शब्दों के उच्चारण से मानव शरीर को शुद्ध तथा निरोगी बनाना भी था। क्या हमारी प्राचीन भाषा अपने आप में समृद्व नही है यदि मैकाले का यह कथन सत्य है तो वर्तमान समय में पाश्चात्य देशों में संस्कृत भाषा को लेकर इतनी जिज्ञासा क्यों है, आखिर क्यों जर्मनी जैसे विकसित देश द्वारा संस्कृत साहित्य को समर्पित विश्वविद्यालय खोले जा चुके हैं और कई अन्य देशों में भी संस्कृत विषय को अनिवार्य विषय के रूप पढ़ाया जाने लगा है।

नासा द्वारा संस्कृत को वैज्ञानिक भाषा के रूप में स्वीकार कर लिया गया है जिससे स्पष्ट होता है कि हमारे देश की भाषा अत्यधिक समृद्ध एवं स्पष्ट है जिसके कारण अन्य देश हमारी भाषा को सीखने की ओर तेजी से अग्रसर हैं। यहां एक अहम बात ये है कि विश्व हमारी संस्कृत भाषा को लेकर गंभीर अध्ययन की ओर अग्रसर है लेकिन इसके बावजूद भी हमारी शिक्षा प्रणाली में मौजूद पाठयक्रम विद्यार्थियों में भारतीय शिक्षा के प्रति गहरी निराशा ही उत्पन्न कर रहे हैं। अब वो समय आ चुका है कि वर्तमान शिक्षा नीति में आमूलचूल परिवर्तत होना चाहिए, हमें अपने देश की भाषा को शिक्षा की मुख्य धारा में लाना ही होगा क्योंकि अब तक ऐसा न होने के कारण मौजूदा शिक्षा प्रणाली में अधिकांश अध्ययनकर्ता मानसिक रूप से पाश्चात्य संस्कृति और साहित्य के गुलाम बनकर रह गए हैं।

मेरे मन में बार-बार दो ही सवाल आते हैं पहला ये कि यदि मैकाले का कथन भारतीय साहित्य को लेकर सही है तो वो

कौन सी विवशता है कि दुनिया के अहम देश भारतीय भाषा, साहित्य का अनुवाद एवं अध्ययन करने में बहुत संजीदगी दिखा रहे हैं? दूसरा यह कि यदि मैकाले का यह कथन असत्य है तो भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली में अब तक मैकाले की विचारधारा को उससे बाहर क्यों नहीं कर पाए हैं, हम उन्हीं पाठयक्रमों पर क्यों निर्भर हैं जिनसे भारतीय पुरातन शिक्षा, भाषा और संस्कृति के प्रति अरूचि पैदा की जा रही है। आजादी के 70 वर्ष के पश्चात भी हम उसी शिक्षा प्रणाली के अधीन हैं। इसके लिए कहीं न कहीं हम ही जिम्मेदार हैं क्योंकि इतने वर्षो के पश्चात भी हम अपनी ठोस एवं समृद्ध शिक्षा नीति बनाने में सफल नहीं हो पाए हैं। हम यदि वैश्विक स्तर पर बात करें तो ये बात बहुत साफ हो चुकी है कि भारतीय भाषा और उसका इतिहास बहुत गहरा है, हमें ये चिंतन करना होगा कि हमारे देश की भावी पीढी आखिर संस्कृत से दूर और अंग्रेजी के करीब क्यों जा रही है। मेरे विचार से अब वो समय करीब आ चुका है जब हम अपनी एक शिक्षा नीति बनाएं और उसमें भारतीय भाषा के साथ ये भी साफ होना अनिवार्य है कि केवल अंग्रेजी ही वो भाषा नहीं है जिसे लेकर दुनिया में विकास के रास्ते खुल रहे हैं, ये समझाना होगा कि दुनिया में वो समय अब महसूस किया जा सकता है जब संस्कृत इस दुनिया के लिए अहम हो जाएगी। हमें अपनी भाषा की गहराई, उसके इतिहास से अपनी नई शिक्षा प्रणाली को सुसज्जित करना होगा।

संस्कृत के ज्ञान का मूल केंद्र बनकर गर्वित महसूस करें

यहां मैं ये भी कहना चाहती हूं कि अन्य विदेशी भाषाओं की भी अपनी महत्ता है लेकिन भारतीय भाषा को दरकिनार कर केवल विदेशी भाषाओं का गुणगान मुझे तकलीफ देता है। हम अपनी भाषाओं के माध्यम से अपने विचारों की अभिव्यक्ति सरलता से कर सकते हैं जिससे हम अपने विस्तृत ज्ञान का भी परिचय दे सकते हैं। ये भी समझना होगा कि हमारी भाषा ही हमारे लिए इस दुनिया के नायाब रास्ते खोल सकती है, हम इस दुनिया में संस्कृत के ज्ञान का मूल केंद्र बनकर गर्वित महसूस करें और इस विश्व का पथ प्रशस्त करें। हम आज भी चाहें कितने ही शिक्षित क्यों न हो जाएं लेकिन अपनी मां के लिए गवारू शब्द बर्दाश्त नहीं करेंगे, मैकाले की शिक्षा प्रणाली की आधारशिला ही हमारी भाषा के अपमान पर रखी गई थी, ये दुखद है कि वो अब तक हमारे देश और पीढ़ी की शिराओं में प्रवाहित होती रही और हम उसमें कोई बदलाव तक नहीं कर पाए।

शिक्षा रुचि के अनुसार होनी चाहिए

देश में शिक्षा प्रणाली को लेकर बहुत गहन तौर पर कार्य करने की आवश्यकता है। हमारे यहां आरंभिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक पूर्णरुप से परिवर्तन होना चाहिए। शिक्षा व्यवस्था में छात्र के ज्ञान को परखने और तराशने के लिए प्राथमिक स्तर से ही प्रयास होने चाहिए और प्रत्येक छात्र की दैनिक गतिविधियों को जांचने के लिए परामर्शदाताओं की कोई व्यवस्था नही है जबकि यदि परामर्शदाता छात्र की रुचि को देखते हुए अभिभावकों की बेसिक शिक्षा के समय ही छात्र रुचि के संबंध में बता दें तो सुधार का नया अध्याय शुरु हो सकता है तथा उक्त पाठयक्रम में ही प्रवेश कराया जाता है और वह उसके लिए रुचिकर भी होता। हमारे देश में छात्र नौकरी के लिए पढ़ते हैं जबकि शिक्षा रुचि के अनुसार होनी चाहिए, रुचिकर विषय में ही कुछ नया करने की संभावना छिपी होती है। राष्ट्र निर्माण में योगदान देने के लिए शिक्षा में नैतिकता का गुण बेहद आवश्यक है और यदि हमारी शिक्षा व्यवहारिक ज्ञान भी उपलब्ध करा रही है तो हम ये मान सकते हैं कि हम बेहतर भविष्य की ओर अग्रसर हैं।

प्रायोगिक शिक्षा बेहद जरुरी

हम यदि गुरुकुल शिक्षा की बात करें तो वो प्रायोगिक शिक्षा का सर्वोत्तम उदाहरण मानी जा सकती है, लेकिन मौजूदा शिक्षा में प्रायोगिक शिक्षा बहुत पीछे रह गई है। दुख की बात ये है कि मौजूदा समय में पुस्तकों में अध्यायों को याद करने की ओर अधिक बल दिया जाता है जबकि प्रायोगिक शिक्षा की ओर ध्यान नहीं है। हमारी पुरातन गुरुकुल व्यवस्था जिसमें एक बडा हिस्सा प्रायोगिक शिक्षा का होता था इसलिए वो गहरी और बहुत गहरी मानी जाती थी।

पुरातन शिक्षा प्रणाली और भाषाओं के प्रति संजीदगी जरुरी

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की शिथिल स्थिति के लिए किसी भी एक पक्ष को दोषी ठहराना सही नही है क्योंकि ये परिवर्तन मिलकर और सभी के सहयोग से संभव है। केवल सरकार या शिक्षण संस्थाएं दोषी नहीं हैं, अलबत्ता ये बात अवश्य कही जानी चाहिए कि सरकार को अपनी शिक्षा नीति के बारे में बहुत पहले पहल करनी चाहिए थी। यदि हमें देश की शिक्षा व्यवस्था को मजबूत एवं समृद्ध बनाना है तो हमें मिलकर इस ओर कार्य करना होगा। हमें उस वैश्विक समूल पर नजर रखते हुए भारतीय संस्कृति और पुरातन शिक्षा व्यवस्था की ओर ईमानदारी से लौटना होगा। हम जब तक अपनी पुरातन शिक्षा प्रणाली और भाषाओं के प्रति संजीदा नहीं होंगे तब तक हम वैश्विक स्तर पर अपने देश के मूल को सामने लाने में भी सफल नहीं हो पाएंगे। मैकाले की शिक्षा प्रणाली ने इस देश की वैचारिक शिराओं को बाधित कर दिया है लेकिन मौजूदा

www.ignited.in

परिस्थितियों का आकलन करते हुए हमें अपनी एक श्रेष्ठ शिक्षा नीति चाहिए जो हमें केवल कारोबारी न बनाए जो हमें अपनी संस्कृति और संस्कारों के चेहरे के रुप में भी स्थापित करे- हमारी पुरातन शिक्षा व्यवस्था (विद्या ददाति विनयम) पर आधारित है जो कि मैकाले की शिक्षा प्रणाली में साजिशपूर्ण तरीके से समूल नष्ट कर दी गई है। हमारी शिक्षा पद्धति मात्र किसी पाठयक्रम की परिधि में न रहकर विस्तृत ज्ञान की ओर प्रेरित करती है। गुरुकुल शिक्षा पद्धति का उल्लेख हमारे वेदों में स्पष्ट परिलक्षित होता है। वेदत्रयी में तीन वेदों क्रमशः ऋगवेद, यर्जुवेद, सामवेद का समावेश है इससे हमारी उत्तम शिक्षा व्यवस्था को समझा जा सकता है। यहां अपने देश की पुरातन शिक्षा प्रणाली का उल्लेख जरुरी है क्योंकि हमारे यहां गुरुकुल शिक्षा पद्धति को समझें तो वो शास्त्र ज्ञान के अलावा प्रकृति और मूल की ओर ले जाती है, इसमें संवाद का गहरा अर्थ है। पंचतत्व की शिक्षा अध्ययन और जीवन के मूल तक ले जाती है।

हमारी पुरातन शिक्षा संवाद पर जोर देती थी, मौखिक और उच्चारण प्रमुख होते थे। शिक्षण के दौरान छात्र-छात्राओं एवं शिक्षक के मध्य संवाद होना एक बेहतर विकल्प है। किसी भी विषय के बारे में सकारात्मक एवं नकारात्मक तत्वों के बारे में समझने के लिए ये आवश्यक है जिससे दोनों एक-दूसरे के विचारों से परिचित हो सकते हैं। इसके माध्यम से शिक्षक छात्रों की रूचियों को भी बेहतर तरीके से समझ पाएंगे कि किस विषय की ओर छात्र का रूझान अधिक है। वर्तमान समय में भी हम उन शिक्षण संस्थानों को बेहतर मानते है जहां शांतिपूर्वक या यूं कहें कि शिक्षक व विद्यार्थियों के बीच बिना वार्ता के ही अध्यापन कार्य सम्पन्न किया जाता है। जहां विद्यार्थियों द्वारा शिक्षकों को सिर्फ एकाग्र होकर सुना जाता है लेकिन इस शिक्षण पद्धति के द्वारा स्वस्थ्य एवं गुणवत्ता परक शिक्षा प्रदान करने में हम असफल ही होते हैं। मुझे लगता है शिक्षा व्यवस्था के अंर्तगत शिक्षण संस्थानों में संस्कृत भाषा को लेकर एवं उसके उपयोग से भविष्य में मिलने वाले अवसरों के बारे में छात्रों के साथ विस्तृत चर्चा हो जिससे छात्रों में संस्कृत भाषा को लेकर गंभीरता आए और शिक्षकों के मार्गदर्शन से प्रेरित होकर अन्य भाषाओं की जननी संस्कृत को सम्मान मिलें।

निष्कर्ष:

मेरा आशय ये है कि हम अपने देश को स्वाभिमान और ठोस विकास के पथ पर तभी अग्रसर कर पाएंगे जब हम अपनी और मौलिक शिक्षा पद्धति बनाएं, ये देश मैं वैचारिक और साहित्यिक वाले एक नए युग का सूत्रपात करेगी। इस दिशा में सरकार, शिक्षण संस्थाओं, पालकों सभी को मिलकर विचार करना चाहिए, ये सभी के समग्र विचारों से ही संभव हो सकेगा। एक वैचारिक तौर पर स्वस्थ्य शिक्षा पद्धति ही स्वस्थ्य समाज, देश और विश्व का निर्माण कर सकती है। हमारी पुरातन शिक्षा व्यवस्था आदर्श रही है और हमारी भाषा संस्कृत अब विश्व पटल पर मजबूती से दस्तक दे चुकी है, यहां आवश्यक है कि अपनी संस्कृति और उसके मूल को समझते हुए शिक्षा के इस मौजूदा सिस्टम में पूरी तरह से बदलाव होना चाहिए। जब तक हम अपनी शिक्षा प्रणाली नहीं लाएंगे तब तक हम न देश को पहचानेंगे, न संस्कृति को, न अपनी भाषा और मूल्यों की गहराई को...। दुनिया यूं ही हमारे भारत देश का अनुसरण नहीं कर रही है बस आवश्यकता उसके मूल को पहचानने की है...।

संदर्भ:

भारत में शैक्षिक व्यवस्था का विकास- लेखिका डॉ. श्रीमती डी.एस. मालवीय तथा डॉ. श्रीमती उषा खरे

आओ देश गढ़ें (आदर्श शिक्षा नीति...मेरे सुझाव) - लेखक बालादत्त शर्मा

Corresponding Author

Dr. Kamla*

Education

kamla.sandeep031@gmail.com